इकाई - 2

*** शिक्षा, विद्यालय और समाज : अंतरसम्बंधों की समझ:-**

मानव एक सामाजिक - सांस्कृतिक प्राणी है वह स्वभाव से ही जिज्ञासु होता है। बालक के जन्म के बाद शुरुआती चरण में परिवार के सदस्यों के बीच रहता है। बाल्यावस्था के समय में वह विद्यालय जाना शुरु करता है तथा अपने आस-पास से भी ज्ञानार्जन करता है। बच्चे जन्म के समय जैविक प्राणी के रूप में होता है। समाज उसे सामाजिक प्राणी बनाने की कोशिश करता है। वह प्रक्रिया जिसके माध्यम से कोई जैविक प्राणी एक सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित करता है, समाजीकरण कहलाता है। सामाजिकरण सामाजिक आशाओं व मान्यताओं के अनुरूप ढलने की प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति समाज के साथ आत्मीकरण करता है और समाज द्वारा जीवंत सदस्य के रूप में स्वीकार किया जाता है। परिवार, आस-पड़ोस के लोग, विद्यालय व समाज की अन्य इकाइयाँ निरंतर अपने तौर-तरीकों, मान्यताओं व विश्वासों के अनुरूप व्यक्ति को ढालने का प्रयास करती है। व्यक्ति समाज के उसी तरीकों को अपनाता है जो उसके मूल्यांकन के उपरांत अपनाने योग्य होता है। समाजीकरण की प्रक्रिया व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित एवं प्रतिबंधित करती है। समाजीकरण प्रक्रिया को मुख्यत: दो स्तरों पर विभाजित किया जाता है (1) प्राथमिक तथा (2) द्वितीयक, प्राथमिक स्तर पर माता-पिता, परिवार, आस-पड़ोस तथा समुदाय जहाँ समाजीकरण के मुख्यत: सरल पक्ष से संबंधित है, वहीं द्वितीयक स्तर पर विद्यालय, धर्म व राज्य समाजीकरण के मुख्यत: जटिल पक्ष है। समाज ने संचित ज्ञान, समझ, व्यवहार, भाव, आस्था व विश्वास की शिक्षा दिये जाने के लिए विद्यालय नामक संस्था को जन्म दिया, जहाँ अध्ययन कर बालक समाज की विभिन्न जटिलताओं के साथ सामंजस्य स्थापित करने में दबाव बना सके। इस प्रकार एक संस्था के रूप में शिक्षा व विद्यालय मूलत: उच्च स्तर के समाजीकरण के बड़े दायित्व का निर्वहन करते हैं, इस प्रकार शिक्षा व विद्यालय

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

तथा समाज के मध्य परस्पर पूरकता का संबंध है। समाजीकरण की प्रक्रिया के दौरान बालक-बालिका मुख्यतः तीन प्रकार के व्यवहार प्रदर्शित करते हैं- सहयोगपरक अनुकूलन, तटस्थ भाव तथा विरोधी प्रतिक्रियाएँ। समाज में सहयोगपरक अनुकूलन प्रशंसित होता है। जबकि तटस्थ भाव व विरोधी प्रतिक्रियाएँ हतोत्साहित की जाती हैं व उनके व्यवहार परिवर्तन का निरंतर प्रयास किया जाता है। विद्यालय में ही उनके व्यवहार का समुचित संवर्धन हो पायेगा इस प्रकार समुदाय विद्यालय को समाजीकरण की उच्चकृत संस्था के रूप में देखता है। पहले समुदाय विद्यालय को यह जानना था विद्यालय की समाज के प्रति भूमिका के संदर्भ में वर्तमान विद्यालयीय व्यवस्थाओं का अवलोकन व तदनुरूप सुधार आवश्यक है। वहीं समाज को भी विद्या के प्रति उसकी भावनाओं के संदर्भ में जागरूक बनाने की जरूरत है। शिक्षार्थी विषयों में प्रकृति व समाज से जुड़ाव के अवसर देने, विद्यालयीय आयोजनों उसको व्यवहार में लाने तथा समाज के हार्दिक सहयोग के माध्यम से ही समाजीकरण की प्रक्रिया बेहतर संचालित हो सकती है।

* विद्यालय में समाजीकरण की प्रक्रिया : विभिन्न कारकों की भूमिका व प्रभावों की समझ =>

हमारे बचपन की शुरुआती दिन परिवार एवं आस - पड़ोस तक ही सीमित रहते हैं। इस परिवार व आस - पड़ोस में बच्चों का समाजीकरण का प्रथम चरण चलता है, परन्तु वहाँ उनको उतनी विविधताओं का सामना नहीं करना पड़ता, जितनी विविधताएँ उन्हें विद्यालय में मिलती हैं। भिन्न-भिन्न उम्र, लिंग, जाति, धर्म, संप्रदाय, संस्कृति, आचार-व्यवहार, आर्थिक सामाजिक दशा आदि से संबंधित बच्चों, शिक्षकों तथा वे अन्य कर्मचारियों आदि की मौजूदगी, बच्चों के लिए समाज के एक लघु रूप का बिम्ब प्रस्तुत करता है। इस प्रकार समाजीकरण हेतु बच्चों को विद्यालय में ज्यादा अवसर प्राप्त होता है। विद्यालय में बच्चों ना सिर्फ समाज के विविध रूपों से परिचित होते हैं वरन विभिन्न प्रकार की गतिविधियों, आयोजनों व भूमिकाओं से भी होकर उन्हें गुजरना पड़ता है प्रार्थना, योग - व्यायाम, खेल - कूद, कक्षा - शिक्षण वृक्षारोपण, प्रभातफेरी, रैलियों, विभिन्न दिवसों को मनाने जाने हेतु आयोजित कार्यक्रमों तथा अपने साथी - समूहों, शिक्षकों व अन्य लोगों के साथ होने वाले संवादों, वस्तुओं के आदान-प्रदान के माध्यम से और विद्यालय - प्रतिनिधि, कक्षा - प्रतिनिधि, बाल - संसद व विद्यालय से होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में मिलने वाली भूमिकाओं होता है। बच्चे के विद्यालयी जीवन में ऐसे अनेकों कारक मौजूद होते हैं, जिनके माध्यम से समाजीकरण की प्रक्रिया संचालित होती है।

विद्यालय जीवन के विभिन्न कारक बच्चों के समक्ष सामाजिक अंतः क्रिया के विभिन्न अवसर प्रस्तुत करते हैं यह सामाजिक अंतः क्रिया मूलतः सहयोग, प्रतियोगिता, संघर्ष, व्यवस्था तथा आत्मसातीकरण के रूप में होती है।

शिक्षा, शिक्षण व विद्यालय की व्यवस्था समाज ने अपनी आशाओं के

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

अनुरूप किया है। अतः समाज की इकाई के व्यक्ति व समान सोच व समझ रखने वाला उनका समूह निरंतर सामाजिक आशाओं को संशोधित, निर्मित व पुनर्निर्मित करते रहता है। हमारा सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनैतिक जीवन तथा चिंतन शिक्षा, शिक्षण व विद्यालयों की दिशा तय करते हैं। परंपरा व रूढ़ियों द्वारा स्थापित वाद और स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व व न्याय की मान्यताओं वाले लोकतांत्रिक मूल्यों के रूप में प्रतिवाद के द्वंद से उपजा संश्लेषणात्मक संवाद ही शिक्षा, शिक्षण तथा विद्यालयों के लिए आधार प्रस्तुत करता है शिक्षक संस्था के रूप में शिक्षा व शिक्षायी विषय-वस्तु है जो विद्यालयीय व्यवस्था के केन्द्र में है जिसके इर्द-गिर्द विद्यालय का समस्त आयोजन संचालित हो रहा है। समाज अपनी क्रमशः बदलती जरूरतों, मान्यताओं व विश्वासों के अनुरूप शिक्षा के स्वरूप को निर्मित करते रहता है और इस प्रकार शिक्षायी विषय-वस्तु में भी आवश्यक परिवर्तन होते रहता है। अतः शिक्षायी विषय वस्तु, स्वतंत्र न होकर समाज, संस्कृति, अर्थ व्यवस्था की आवश्यकताएँ तथा राजनीतिक दृष्टि आदि शिक्षायी विषय-वस्तु को तय करते हैं। अतः हमें शिक्षायी विषय-वस्तु को इस विस्तृत दृष्टिकोण से देखना होगा ताकि आवश्यकता व उपयोगिता के आधार पर निरंतर इसका आकलन, मूल्यकरण व मूल्यांकन होता रहे और इस प्रकार अनुपयोगी विषय-वस्तु के पीछे छात्रों, विद्यालयों व शिक्षकों के लगने वाले समय व श्रम को बचाया जा सके।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner